साहित्यसंहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 09
September 2016

ठण्ड के मौसम में चली पवन

- शशिकांत निशांत शर्मा 'साहिल'

ठण्ड के मौसम में चली पवन
मन में लगी जाने कैसी लगन
धरती चूम रही गगन
पशु पक्षी भी है मगन
अजब है ये मानव मन
बढे दिल की धरकन
ज्यादा नहीं कहते है कम
मत पूछ मेरे यार कैसे है हम
हर पल सितम ढाह रह है सितम
ये ठण्ड का मौसम
हो जाये रंगीन ये शाम
पीते है दो चार घुट जम
मत पूछ उसका नाम
कर दिया जिसने जीना हराम
आया है ये ठण्ड का मौसम
मन को नहीं आराम
ठण्ड बढ़ रहा हर दम
अब आ भी जाओ मेरे हमदम
क़यामत कर तरही तेरी रुसवाईयाँ
लिख रहा 'साहिल' अपनी तन्हाइयां
इसी ठण्ड के मौसम में
शोला भड़कता है सबनम से
प्रेम जन मिलते है है
प्रणय मिलन होता है
जो प्रेमी दूर होते है
विरह की अग्नि में जलते है
ठण्ड भरी जब चले हवाएं

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 09
September 2016

तन मन में आग लगाये
विरह की इस अग्नि का ईंधन
बनता हर पल ये अनुरागी मन
- शशिकांत निशांत शर्मा 'साहिल'